राज कॉमिक्स
मूल्य 10.00 संख्या 550
दलदल
सुपर कमांडो ध्रुव

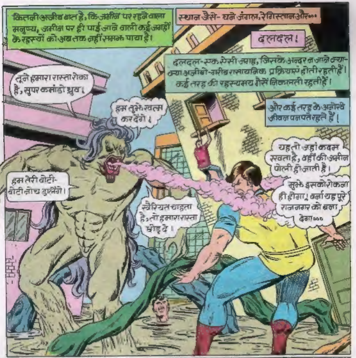

दलदल

कथा एवं चित्र • अनुपम सिन्हा

सम्पादक • मनीष गुप्ता

दलदल– मौत का वह फंदा, जिसमें पैर रखने के बाद, आदमी धंसता ही चला जाता है।
और वहां से उसको बाहर निकाल पाती है...
...सिर्फ उसकी मौत!
एक और अपराधी, अपने आप, मौत की आगोश में समा गया!
लेकिन अपराधी हम पुलिस वालों से बचने के लिए दलदल की तरफ ही क्यों भागते हैं?
इस रास्ते के अलावा, बाकी पूरे शहर की तो हम नाकेबंदी कर देते हैं।
खैर! पिछले तीन सालों में, दलदल में धंस कर मरने वाला यह बत्तीसवां अपराधी था!
इसके अलावा न जाने कितने निर्दोष लोग भी इसमें धंस कर मर चुके हैं।
अब हमको, इस रास्ते को भी बन्द करना ही पड़ेगा!
खतरनाक जगह होने के बावजूद दलदल का सन्नाटा लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करता ही रहता है।
बंटू, हम इम्तहान में फेल होने पर घर से भाग तो आए हैं। लेकिन तू हमको इधर क्यों ले आया है?
इधर हमको कोई भी ढूंढने नहीं आएगा, लक्की! वर्ना याद है न, पिछली बार कम नंबर लाने पर हमारे पापा ने हमारी कैसी पिटाई की थी।
याद न होता, तो रिजल्ट मिलते ही स्कूल से सीधे क्यों भाग आता यहां पर।
पर ये जगह है कैसी? अजीब-अजीब सी महकें आ रही हैं!
मुझे चक्कर सा आ रहा है, बंटू!

म... मुझे भी मितली हो रही है।
च... चलो वापस चलते हैं।
लेकिन दोनों में से कोई भी वापस नहीं आ सका।
क्योंकि वापस आने से पहले ही दोनों बेहोशी के संसार में पहुंच चुके थे।
मौत, उनको दलदल के अंदर खींच रही थी। और उस सन्नाटे में बचाने वाला कोई नहीं था।
छप
छपाक
लेकिन उन दोनों मासूमों की किस्मत में-
... अभी मौत नहीं लिखी थी।
चि चीं चींची चींईईई!
ओह! जल्दी चलो!
मुझे बताओ, कि वे दोनों बच्चे दलदल में कहां पर पड़े हैं!
वक्त बहुत कम है।
वक्त सचमुच नहीं था।
ध्रुव के घटनास्थल पर पहुंचने तक, आधे से ज्यादा शरीर धसकती मिट्टी में गायब हो चुके थे।
ओफ! इन तक तो पहुंच पाने का कोई रास्ता भी नजर नहीं आ रहा है!
और उधर से ये अजीब-अजीब गैसें सूंघकर, सिर घूम रहा है!
फट फट फट फट

अगर ये होश में होते तो काम थोड़ा आसान ही आता। लेकिन फिर भी मैं इनको मरने नहीं दूंगा।
और मेरी मदद करेगी, मजबूत बेलों की रस्सी।
ध्रुव का इशारा पाकर, चिड़िया रस्सी का फंदा लेकर ऊपर उड़ी।
और उसको सही जगह पर अटका दिया।
अब ध्रुव के लिए काम थोड़ा आसान हो गया था।
उसका बदन रस्सी के सहारे हवा में उड़ा।
और रास्ते में बगैर रुके-
दूसरे किनारे पर सुरक्षित आ उतरा।
एक बच्चा तो बच गया।
अब दूसरे को बचाने के लिए मेरे पास कुछ ही सेकेंड हैं।

पर तभी कुछ घरघराहट की आवाजों ने ध्रुव का ध्यान खींच लिया—
दो जहाज दल-दल के ऊपर उड़ रहे थे।
अगले ही पल— ध्रुव की अपने सवाल का जवाब मिल गया।
ये कैसे जहाज हैं? इन पर तो हमारे पड़ोसी देश का निशान बना हुआ है!
पर... ये इस दल-दल के ऊपर क्या कर रहे हैं?
और एक जहाज तेजी से दलदल की तरफ गिरने लगा।
ध्रुव के पास कुछ ही सेकेंडों का समय था।
बिना कुछ सोचे, उसका शरीर फिर से हवा में झूल गया।
...लेकिन गिरते हुए जहाज के जलते टुकड़े, जहाज से पहले ही नीचे गिर चुके थे।
इस बार भी उसकी टाइमिंग एकदम सही थी।
दूसरे बच्चे को उसने उठा तो लिया था...
और उनमें से एक टुकड़े का निशाना, वह बेलों की रस्सी थी।
ओफ! यह क्या हुआ?

लेकिन अब भी मैं बच्चे को तो बचा ही सकता हूं!
शक्तिशाली बाजुओं ने, एक ही झटके से, बच्चे को सुरक्षित किनारे की तरफ उछाल दिया।
और साथ ही साथ वातावरण, एक कड़कड़ाहट से गूंज उठा।
कड़ड़ड़ड़
जहाज, ठीक ध्रुव के सिर के ऊपर, पेड़ों की शाखों में आकर फंस गया था।
दोनों तरफ से मौत है। नीचे से भी खींच रही है!
और ऊपर से भी गिरने वाली है!
कुछ ही मिनटों में प्लेन में लगी आग, शाखों को भी जला देगी, और फिर यह प्लेन सीधा मेरे सिर पर गिरेगा!
रस्सी भी टूट कर इतनी छोटी हो गई है, कि इसको ऊपर पेड़ की डाल पर अटकाया नहीं जा सकता।
और मेरा बदन धीरे-धीरे दलदल में धंसता जा रहा है। लेकिन अब ये 'धड़धड़' की आवाज कहां से आ रही है।
धड़ धड़ धड़
ओह! हड़बड़ी में मैं अपनी मोटर-साइकिल को स्टार्ट ही छोड़ आया था!
अब यही मुझे यहां से बाहर निकालेगी।
सबसे पहले मोटरसाइकिल को, इस फंदे में फंसाना होगा।
और फिर इसका, 'ऑटोड्राइविंग सिस्टम' चालू करना होगा।

एक सधे हुए निशाने ने, 'ऑटो ड्राइविंग' वाले बटन को दबा दिया।
खट्
और मोटरसाइकल में लगे, कंप्यूटर सिस्टम ने...
...स्टैण्ड पर खड़ी मोटरसाइकल को, धीरे-धीरे आगे बढ़ाना शुरू कर दिया—
मुझे इस बात का ध्यान रखना होगा, कि खिंचाव से मोटरसाइकल गिरने न पाए।
कुछ ही पलों बाद- ध्रुव दलदल से बाहर था।
न नीचे की मौत उसको निगल पाई थी...
और न ही ऊपर की मौत उस तक पहुंच पाई थी।
छपाक
ओह! बाल-बाल बचा!
लेकिन आश्चर्य की बात है! एक ही देश के दो जहाजों में झगड़ा क्यों?
दिल तो चाहता है कि यहां रुककर इस प्लेन की कुछ छानबीन करूं।
लेकिन बच्चों को तुरन्त अस्पताल पहुंचाना जरूरी है।
न जाने दलदल की गैसों ने इन पर क्या असर किया है?
अगर ध्रुव, कुछ और देर के लिए रुक जाता, तो वह प्लेन से बाहर गिरे उन सिलेंडरों को देख लेता!
जिनमें से एक दलदल में धंस रहा था!

दूसरा पास बहती पानी की धारा में डूब रहा था...
और तीसरा सिलेंडर दलदल की लंबी घासों के बीच पड़ा हुआ था।
और राजनगर में—
दूसरे देश के प्लेन का गिरना एक महत्त्वपूर्ण घटना है, ध्रुव! लेकिन रात के समय में दलदल में जाकर छानबीन कर पाना संभव नहीं है।
पुलिस हेडक्वार्टर
हमको सुबह होने का इंतजार करना पड़ेगा। वैसे भी, वह प्लेन वहां से उड़कर तो कहीं जाने से रहा।
और उस सिलेंडर के बगल में पड़ी थी...
...एक बेहोश आकृति, जो निश्चित रूप से दुर्घटना ग्रस्त प्लेन के पायलट की थी।
लेकिन कई बार तो सिर्फ एक पल में ही, सब कुछ बदल जाता है।
यहां पर तो रात भर का समय था।
दलदल में डूबे सिलेंडर में जो कुछ भी भरा था, वह दलदल में घुलकर, न जाने कैसी रासायनिक प्रक्रियाएं कर रहा था।
ठीक है, सर! लेकिन कल वहां जाने से पहले, मुझे बुलाना मत भूलिएगा।
ठीक है! लेकिन अभी तो जाकर आराम से सोओ! रात भर में दलदल बदल नहीं जाएगा!
दलदल में मिले, मानव शरीर के अंगों के कण और रहस्यमय गैसों के साथ मिलकर सिलेंडर में भरी वस्तु, न जाने कैसी आकृति को जन्म दे रही थी।

लेकिन वह आकृति जो कुछ भी थी, किसी की भी, जिंदगी भर की नींद उड़ा देने के लिए काफी थी।
दूसरा सिलेंडर पानी में डूबकर न जाने कहाँ पहुँच गया था।
और घास के बीच पड़ा तीसरा सिलेंडर, और उसके बगल में बेहोश पड़ी आकृति अब वहाँ पर नहीं थे।
रात भर में काफी कुछ बदल गया था।
पहला सिलेंडर अपना काम करके खत्म हो चुका था।
सुबह ध्रुव और पुलिस पार्टी के दलदल पहुँचने तक सब शांत हो चुका था।
वह रहा, हवाई जहाज का मलबा! इसका काफी हिस्सा डूब चुका है।
लेकिन अभी भी हमारी क्रेन इसको बाहर निकाल लेगी।
क्रेन ने जहाज के मलबे को अपने हुक में फंसा लिया।
और एक हल्के से खिंचाव से, जहाज का मलबा, दलदल से बाहर आने लगा।

अचानक- क्रेन का गर्डर हवा में ही रुक गया।
मलबे का बाहर निकलना रुक गया।
और उसके बाद...
...घटा एक आश्चर्य जनक हादसा
बचाओ!
...भयावह !
ऐसा हादसा, जो देखते ही देखते, 'आश्चर्यजनक' से बन गया...
और फिर-
बची!
ओ माई गॉड! यह... यह क्या है?
ऐसा जीव तो न कभी देखा, और नहीं कभी सुना!
दलदल से निकला है, तो इसे दलदला कहलो!

अगले ही पल पिस्तौलें गरज उठीं।
लेकिन गोलियाँ, दलदला के जैली जैसे बदन से आर-पार निकल गईं, बगैर कोई नुकसान पहुँचाए।
धांय!
धांय!
और तब घटा एक और हादसा।
स... सर! हमारे पैर जमीन में धंस रहे हैं।
जमीन, दल-दल बनती जा रही है।
इस दलदला के, जमीन पर पैर रखते ही!
कूदो!
दलदला एक कदम भी नहीं रुका।
सभी तुरन्त दूसरी तरफ कूद लिए—
यह दलदला तो शहर की तरफ बढ़ रहा है।
अगर यह शहर पहुंच गया, तो न जाने राजनगर का क्या हाल करेगा!
कुछ ही पलों बाद, ध्रुव क्रेन के केबिन के अन्दर था।
शुक्र है कि ये क्रेन अभी भी चालू हालत में है।
मुझे इसको तुरन्त रोकना होगा!
पूरी पावर मिलते ही क्रेन का विशालकाय गर्डर हवा में घूमा—

और—
ढड़क
एक अजीबो-गरीब चीख हवा में उभरी—
ऐसी चीख, जिसमें कई आवाज़ों की चीख, एक साथ शामिल थी।
साथ ही साथ दलदला के मुंह से एक फुंकार निकली—
ऐसी फुंकार- जिसमें मिली-जुली थी, दलदल से निकलने वाली सभी घातक गैसें,
कुछ ही पलों बाद— दलदला का शरीर, हवा में लटका हुआ था।
सभी पुलिस वाले, इस गैस के संपर्क में आते ही बेहोश हो गए.
अजीबो गरीब प्राणी है!
इसको रोकना आसान नहीं होगा... लेकिन फिर भी, कोशिश तो करनी ही
लोहे के मोटे तार ने दलदला को अपनी जकड़ में ले लिया।
अब देखता हूं कि ये भागकर कहां जाता है!

पर तभी- दलदला का जेली जैसा शरीर, कड़े शिकंजे से, जैसे पिघलकर बाहर निकलने लगा।
कुछ ही पलों में वह शिकंजे से आजाद था
वह 'दलदला' अब ध्रुव की तरफ घूमा—
तू हमको क्यों रोकना चाहता है?
हम तो अपना खाना ढूंढने आ रहे हैं।
हमको भूख लग रही है।
अगर तू हमें रोकेगा, तो हम तुझे खत्म कर देंगे।
कौन हो तुम?
'तुम' नहीं, 'तुमलोग' कहो। हम लोग कई हैं, लेकिन हैं इस एक 'आकृति' के अंदर।
हम दलदल में डूब कर मरे मानवों के अंगों के कणों से मिलकर बने हैं।
इसलिए हम तुमको अपने रास्ते से हटा देंगे।
एक गाढ़ी और चिपचिपी दलदली कीचड़ की फुहार ने, ध्रुव के शरीर को ढक लिया—
और अब हम अपना खाना ढूंढने जा रहे हैं।
हमको लग रहा है कि तुम हमारा रास्ता नहीं रोकोगे।
और उस पर बेहोशी की चादर छाती चली गई।

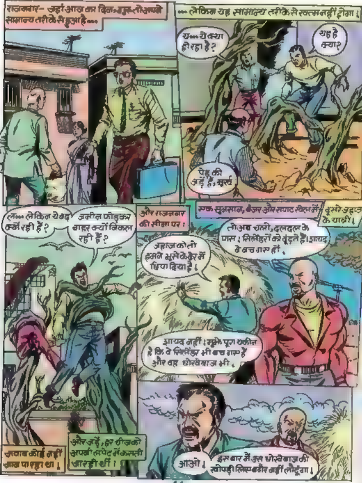

राजनगर– जहां आज का दिन शुरू तो अपने सामान्य तरीके से हुआ है...
...लेकिन यह सामान्य तरीके से खत्म नहीं होगा।
य... ये क्या हो रहा है?
यह है क्या?
पेड़ की जड़ें हैं, कुर्र
ल... लेकिन ये बढ़ क्यों रही हैं?
जमीन फोड़कर बाहर क्यों निकल रही हैं?
और राजनगर की सीमा पर।
एक सुनसान, बंजर और सपाट क्षेत्र में दूसरे जहाज के यात्री।
तो अब चलो, दलदल के पास। सिलेंडरों को ढूंढते हैं। शायद वे बच गए हों।
जहाज को तो हमने भूसे के ढेर में छिपा दिया है।
शायद नहीं। मुझे पूरा यकीन है कि वे सिलेंडर भी बच गए हैं और वह धोखेबाज भी।
और जड़ें, हर चीज को अपनी लपेट में कसती जा रही थीं।
जवाब कोई नहीं जान पा रहा था।
आओ।
इस बार मैं उस धोखेबाज की खोपड़ी लिए बगैर नहीं लौटूंगा।

और दलदल के किनारे–
ओह !
तुम ठीक महसूस कर रही हो न, ध्रुव?
वह... वह प्राणी किधर गया? वह दलदला।
मालूम नहीं। जब हम होश में आए, तो वह यहां पर नहीं था।
तुम दलदल की मिट्टी में ढके बेहोश पड़े थे।
बड़ी मुश्किल से हमने वह मिट्टी तुम्हारे ऊपर से धुलाई है।
ओह। कहीं वह 'दलदला' राजनगर की तरफ न गया हो।
हमको तुरंत वहां पर चलकर देखना चाहिए।
राजनगर में स्थिति भयावह थी।
लगता था कि जिस जंगल को काटकर राजनगर बसाया गया है, वह फिर से राजनगर को वापस लेना चाहता है।
जड़ों का कसाव, इमारतों को चूर-चूर कर देने के लिए बेताब था।
और इस स्थिति से निपटने का हर संभव रास्ता अपनाया जा रहा था।
कोई फायदा नहीं हो रहा है, सर। जितनी देर में हम एक जड़ काटते हैं–
उतनी देर में पांच 'जड़ें' निकल आती हैं।

इमारतें टूट रही हैं। ओ... ओ माई गॉड!
एक बच्चा बाहर गिर गया है!
यह गिरकर यकीनन मर जाएगा!
लेकिन मौत आने से पहले कौन मर सकता है।
भगवान बचाने का कोई न कोई साधन भेज ही देते हैं।
और लोग इस साधन को फरिश्ते का नाम देते हैं।
फरिश्ते— जो अपनी जान पर खेल कर भी...
...दूसरों की जान बचा लेते...
...नहीं चूकते।
सुपर कमांडो ध्रुव!

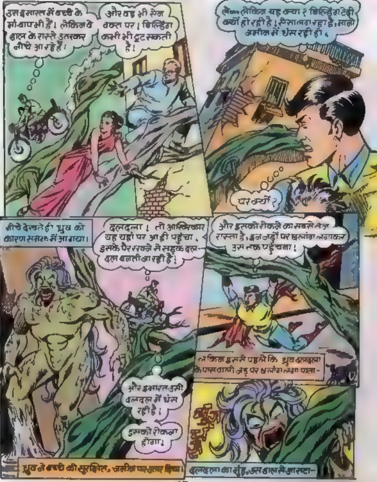
उस इमारत में बच्ची के माँ-बाप भी हैं। लेकिन वे हाल के रास्ते उतरकर नीचे आ रहे हैं।
और वह भी ऐन वक्त पर। बिल्डिंग कभी भी टूट सकती है।
लेकिन... लेकिन यह क्या? बिल्डिंग टेढ़ी क्यों हो रही है। ऐसा लग रहा है, मानो जमीन में धंस रही हो।
पर क्यों?
नीचे देखते ही ध्रुव को कारण समझ में आ गया।
दलदला! तो आखिरकार यह यहां पर आ ही पहुंचा, इसके पैर रखने से सड़क दल-दल बनती आ रही है!
और इसको रोकने का सबसे तेज रास्ता है, इन जड़ों पर छलांग लगाकर उस तक पहुंचना!
और इमारत इसी दलदल में धंस रही है।
इसको रोकना होगा।
ध्रुव ने बच्ची को सुरक्षित, जमीन पर उतार दिया।
लेकिन इससे पहले कि ध्रुव दलदला के पास वाली जड़ पर छलांग लगा पाता-
दलदला का मुंह, उस हाल से आ सटा-

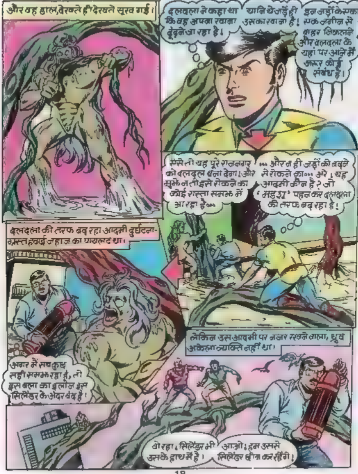
और वह हालत,देखते ही देखते सूख गई।
दलदला ने कहा था कि वह अपना खजाना ढूंढने आ रहा है।
यानि ये जड़ें ही उसका खजाना हैं!
इन जड़ों के एकाएक जमीन से बाहर निकलने और दलदला के यहां पर आने में जरूर कोई संबंध है।
इससे तो यह पूरे राजनगर को दलदल बना देगा! और मुझे न तो इसे रोकने का कोई रास्ता समझ में आ रहा है...
...और न ही जड़ों को बढ़ने से रोकने का... अरे! यह आदमी कौन है? जो 'मड शू' पहन कर दलदला की तरफ बढ़ रहा है!
दलदला की तरफ बढ़ रहा आदमी दुर्घटना-ग्रस्त हवाई जहाज का पायलट था।
अगर मैं सब कुछ सही समझ रहा हूं, तो इस बला का इलाज इस सिलेंडर के अंदर बंद है!
लेकिन उस आदमी पर नजर रखने वाला, ध्रुव अकेला व्यक्ति नहीं था।
वो रहा! सिलेंडर भी उसके हाथ में है।
आओ! हम उससे सिलेंडर छीन कर रहेंगे!

उधर वह आदमी दलदला तक पहुंच चुका था—
इस 'स्प्रे' से इसके शरीर का गलना शुरू हो जाना चाहिए।
लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।
गैस ने 'दलदला' को और क्रोधित करने के अलावा कुछ नहीं किया—
सिलेंडर, हवा में उछल गया—
लेकिन दलदली जमीन पर नहीं गिर पाया—
तुम लोथा?
जानना है कि तू प्लेन क्रैश से क्यों बच गया?
क्योंकि तेरी किस्मत में मेरी गोली खाकर मरना लिखा था।
ध्रुव, दूर से ही ये सारा दृश्य देख रहा था
उसकी आंखें ट्रिगर पर दबती उंगली को ध्यान से देख रही थीं
हां, हम, तू क्या समझता था, धोखेबाज कि हम तुझे मरा समझ कर पीछा करना छोड़ देंगे।
मैं इतनी दूर से, गोली को चलने से तो रोक नहीं सकता...

लेकिन गोली को निशाने तक पहुंचने से तो रोक ही सकता हूं।
और गोली और निशाने के बीच में एक रुकावट आ खड़ी हुई—
टन
दोनों हमलावर पलभर में सारी स्थिति समझ गए—
ध्रुव का हाथ घूमा—
ध्रुव, जड़ों पर लपकता हुआ कुछ ही क्षणों में, घटनास्थल पर आ पहुंचा—
कौन हो तुम?
और वे दोनों तुम पर हमला क्यों कर रहे थे?
भागो! इस समय सिलेंडर लेकर यहां से भागना ज्यादा जरूरी है।
यह आदमी निश्चित रूप से हलहला के बारे में मुझसे ज्यादा जानता है।
मुझे इसके कहे पर अमल करना चाहिए।
यह सब मैं तुमको बाद में भी बता सकता हूं! पहले उस सिलेंडर को वापस लाना बहुत जरूरी है
इस प्राणी को रोकने का सिर्फ वही एक तरीका है।
जुपिटर सर्कस में सधा हुआ, ध्रुव का शरीर, तेजी से जड़ों पर से उछाल भरता हुआ दोनों हमलावरों की तरफ बढ़ गया—

वह लड़का हमारे पीछे आ रहा है, बॉस।
खत्म कर दो इसको। हमको अब कोई भी नहीं रोक सकता।
लेकिन पिस्तौल में वे गोलियां नहीं भरी थीं, जो ध्रुव के शरीर को छू सकतीं—
...लेकिन तुम तक एक भी गोली नहीं पहुंच-
आह!
कमाल है! मैंने सारी की सारी गोलियां तुम पर झोंक दीं...
गोलियों का मुझसे झगड़ा चल रहा है। वे मुझसे मिले बगैर अगल-बगल से निकल जाती हैं।
मेरा नाम 'सुपर कमांडो ध्रुव' है
दूसरी तरफ- दलदल और जड़ों को रोकने की जी-तोड़ कोशिशें की जा रही थीं।
कीटनाशक छिड़काव का तो उल्टा असर हो रहा है।
छिड़काव से जड़ें और तेजी से बढ़ रही हैं।
छिड़काव रोकना पड़ेगा।

दलदल का कहर भी जबरदस्त जारी था।
अब तक पाँच इमारतें दलदल में धंस चुकी हैं।
अब हमको इसे खत्म करना ही पड़ेगा!
धड़ाम
लेकिन कैसे, सर? हमारे टैंक के गोले तो बगैर कोई नुकसान पहुंचाए इसके आर-पार हो जा रहे हैं।
हमारा टैंक भी जमीन में धंस रहा है, इसने यहां की जमीन को भी दलदल बना दिया है।
कूदो!
कूदो!
और वहां से थोड़ी ही दूर पर—ध्रुव उस चीज को हासिल करने की कोशिश कर रहा था।
जो इस मुसीबत से, राजनगर को उबार सकती थी।
सिलेंडर-
लेकिन सिलेंडर पकड़े हुए हाथ भी साधारण अपराधियों के नहीं थे।
अगर तू सुपर कमांडो ध्रुव है, लड़के, तो हम भी अपने देश के ट्रेंड "बुलडॉग कमांडो" हैं।

और हमारा मिशन है, ये सिलेंडर लेकर वापस जाना!
कुचल दे इसके हाथ, रेफाली! गिरा दे इसको दलदल में।
पर ध्रुव के बदन को दलदल में गिरने का कोई शौक नहीं था।
दो सेकेंडों में ही स्थिति पूरी तरह से उल्टी हो गई थी।
कारण स्पष्ट था।
तभी अकस्मात्
अरे! ये जड़ सूखनी कैसे शुरू हो गई?
चसुरपुर्र
उस जड़ को दलदला अपना भोजन बना रहा था।

अब जड़, एक बच्चे का भी भार सँभालने लायक नहीं थी।
ध्रुव ने तो तुरंत उछलकर दूसरी जड़ पकड़ ली–
और देखते ही देखते – दलदल के दलदली कीचड़ ने उनको निगल लिया
ध्रुव को उनको बचाने का मौका तक नहीं मिल पाया।
अब समय था, राजनगर को बचाने का,
और इससे पहले कि पूरा राजनगर दलदल बन जाए, दलदला को रोकने का –
लेकिन बाकी दोनों 'बुलडॉग कमांडो' का शरीर नीचे दलदल में जा गिरा।
अब बताओ! इस सिलेंडर में क्या भरा है? इससे दलदला को कैसे रोका जा सकता है?
और... तुम हो कौन?
दलदला के बारे में तुम क्या जानते हो?
सबसे पहले मैं बताता हूं कि मैं हूं कौन? मैं एक रसायन वैज्ञानिक हूं, इंग्लैंड का निवासी हूं, और कुछ समय पहले छुट्टियों पर तुम्हारे पड़ोसी देश मैसनार घूमने आया था।
मैसनार? ओह, दलदल के ऊपर उड़ रहे विमानों पर इसी देश का चिन्ह बना था!
हां, मैसनार! और वहीं पर मेरा अपहरण कर लिया गया। मेरा नाम मैकनमारा है
मैकनमारा, याद आया! आपके अपहरण का समाचार तो मैंने भी पढ़ा था!
मेरा अपहरण, मैसनार की खुफिया एजेंसी के 'बुलडॉग कमांडोज़' ने किया था। वे मुझसे कुछ खतरनाक रासायनिक हथियार बनवाना चाहते थे।

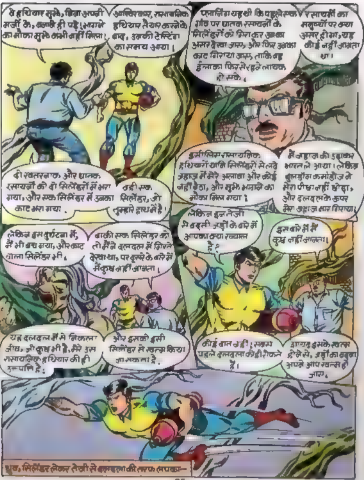
ये हथियार मुझे, बिना अपनी मर्ज़ी के, बनाने ही पड़े। भागने का मौका मुझे कभी नहीं मिला।
आखिरकार, रासायनिक हथियार तैयार करने के बाद, उनकी टेस्टिंग का समय आया।
प्लानिंग यह थी कि पहले एक गाँव पर घातक रसायनों के सिलेंडरों को गिरा कर उनका असर देखा जाए, और फिर उनका काट गिराया जाए, ताकि वह इलाका फिर से रहने लायक हो सके,
रसायनों का मनुष्यों पर क्या असर होगा, यह कोई नहीं जानता था।
वो खतरनाक और घातक रसायनों को दो सिलेंडरों में भरा गया, और एक सिलेंडर में उनका काट भरा गया.
यही एक सिलेंडर, जो तुम्हारे हाथ में है!
इसीलिए रासायनिक हथियारों वाले सिलेंडरों से लदे जहाज़ में मेरे अलावा और कोई नहीं बैठा, और मुझे भागने का मौका मिल गया।
मैं जहाज़ को उड़ाकर भारत ले आया। लेकिन बुलडॉग कमांडोज़ ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा, और दलदल के ऊपर मेरा जहाज़ मार गिराया।
लेकिन इस दुर्घटना में, मैं भी बच गया, और काट वाला सिलेंडर भी।
बाकी एक सिलेंडर को तो मैंने दलदल में गिरते देखा था, पर दूसरे के बारे में मैं कुछ नहीं जानता।
लेकिन इन तेज़ी से बढ़ती जड़ों के बारे में आपका क्या ख्याल है?
इस बारे में मैं कुछ नहीं जानता।
यह दलदल में से निकलता जीव, जो कुछ भी है, मेरे उस रासायनिक हथियार की ही उत्पत्ति है;
और इसको इसी सिलेंडर से खत्म किया जा सकता है.
कोई बात नहीं! सबसे पहले दलदला को ही रोकना है।
शायद इसके खत्म होने से, जड़ों का बढ़ना अपने आप खत्म हो जाए.
ध्रुव, सिलेंडर लेकर तेज़ी से दलदला की तरफ लपका—

– और एक तेज लात, दलदला के शरीर पर आ बरसी !
उसके दलदली कीचड़ से बने हाथ एकाएक लंबे होने लगे। और –
धाड़ !
तू बच गया लड़के ?
और फिर हमारा रास्ता रोकने चला आया ?
आखिर हमसे तेरी क्या दुश्मनी है ?
तू हम लोगों को खाना क्यों नहीं खाने दे रहा ?
दलदला को जैसे हजारों बिच्छुओं ने एक साथ डंक मार-
ओह, हाथ था या हजार किलो का पत्थर.
पूरा सिर घूम गया.
वैसे कुछ बातें तो मैं समझ चुका हूं। इस पर फेन जैसी चीज़ों का असर होता है।
और यह अपनी सारी शक्ति दलदल से खींच रहा है।
ऐसे तो इस पर असर करने में बहुत समय लगेगा !
और तब तक यह मेरी हड्डी पसली एक कर चुका होगा।
अगर इसके पैरों को जमीन से उखाड़ दिया जाए...

...तो इसकी ताकत में कुछ कमी आनी चाहिए।
आह, एक विशालकाय पूंछ की तरह दलदला से टकराई—
तड़ड़ड़ाक
और अगले ही पल- ध्रुव का शरीर भी उससे आ टकराया—
आऽऽऽऽ
और उसके पैर जमीन से उखड़ गए!
वातावरण में कई चीखें एक साथ गूंज उठीं—
धाड़
लेकिन दलदला कई मानवों के कणों से मिलकर बना था। और उसमें कई मानवों जितनी शक्ति थी।
ध्रुव का शरीर, जड़ से कसकर टकराया—
उसका निशाना पलभर के लिए शून्य हो गया—
और दलदला वापस अपने भोजन की तरफ मुड़ गया—
इस पर ऊपर से 'स्प्रे' करने का कोई फायदा नहीं है। अगर यह स्प्रे, इसके मुंह के ज़रिए, इसके पेट में चला जाए तो यह कुछ नहीं कर पाएगा।
लेकिन कैसे, मेकनमरा! इसके मुंह तक पहुंचकर स्प्रे अंदर डाल पाना असंभव काम है।

और हमको सिर्फ 'दलदला' का नहीं बल्कि इन जड़ों का इलाज भी ढूंढना है। दलदला से ज्यादा नुकसान तो ये जड़ें कर रही हैं।
एक बार में एक मुसीबत से निपटना चाहिए। पहले दलदला का इंतजाम करो, फिर...
एक मिनट, मैकनमारा!
इस बात पर तो मैंने ध्यान दिया ही नहीं।
किस बात पर?
इन जड़ों को देखो! ये सारी जड़ें एक ही पेड़ की हैं।
सच में! पर इसका मतलब क्या हुआ?
मुझे पूरा यकीन है, कि यह मुसीबत भी तुम्हारे कारण ही आई है।
मेरे कारण?
हां, तुम्हारे दूसरे सिलेंडर के कारण।
इस पेड़ की जड़ों को कहीं से वही रसायन मिल रहा है, और उसकी आश्चर्यजनक प्रतिक्रिया के कारण ही ये तेजी से बढ़ रही है।
और चूंकि दलदला भी उसी तरह के रसायन की उपज है, इसीलिए इन जड़ों के जरिए उस रसायन को पी रहा है! वह रसायन ही इसका भोजन है।
मुझे लग रहा है कि तुम ठीक कह रहे हो।
पर इससे तुम दलदला और जड़ों को रोकोगे कैसे?
और वह तमाशा इस कुएं से शुरू होता है।
बताने का समय नहीं है, मैकनमारा! तुम सिर्फ यहीं रुककर तमाशा देखो!
ये कुएं में कूदने क्यों जा रहा है? डूब कर मर जाएगा पानी में।
मैकनमारा यह नहीं जानता था कि ध्रुव पानी में सांस ले सकता है।
छपाक्
क्योंकि यह कुआं ही भूमिगत जलधारा तक पहुंचने का सबसे अच्छा रास्ता है।

यह हर जड़ एक ही तने से निकलती है। इसीलिए अगर मैं किसी भी जड़ के साथ-साथ भूमिगत धारा में तैरता जाऊं...
...तो मैं इस जड़ के मुख्य पेड़ तक पहुंच सकता हूं।
वह रहा तना! और उसके नीचे फंसा हुआ है, एक सिलेंडर। मेरा शक एकदम सही था।
अब सबसे पहला काम, इस घातक रसायन भरे सिलेंडर के साथ-साथ इस काट वाले सिलिंडर को भी फंसा देना है।
ताकि इस पेड़ में यह 'काट वाला रसायन' भी घुलता रहे।
जड़ों ने सड़क की सतह को कमजोर बना दिया है। इसीलिए...
...बाहर निकलने में दिक्कत नहीं होनी चाहिए।
अब दूसरा काम है, दलदला को इस मुख्य तने तक लाना...
...क्योंकि 'काट वाले रसायन' को जड़ों तक फैलने में काफी समय लगेगा।
धाड़
ध्रुव अपनी सारी बची-खुची शक्ति बटोर कर दलदला पर टूट पड़ा।

उसका हर सधा हुआ वार, दलदला को पेड़ की मुख्य जड़ के पास ले जा रहा था।
चिंयायाया
धाड़
दलदला की भूख शांत हो रही थी।
और उसका गुस्सा भड़क रहा था।
बेरी गुड... दलदला मेरे पीछे लग गया है। अब इसको मुख्य जड़ तक ले जाना मामूली काम है।
और क्रोध के कारण, दब गई भूख, तेज होती जा रही थी।
अब हम तुझको जिन्दा नहीं छोड़ेंगी, लड़के।
खत्म कर देंगे तुझको।
और उसके बाद अपनी भूख को शांत करेंगे।
जैसे-जैसे दलदला, मुख्य जड़ के पास आता जा रहा था, रसायन की महक तेज होती जा रही थी।
उसकी आंखें मुख्य जड़ पर नजर पड़ते ही चमक उठीं।

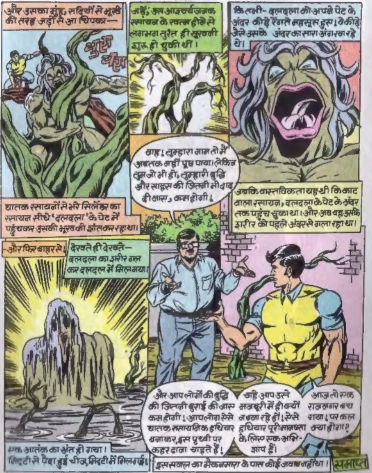
और उसका मुंह, सदियों से भूखी की तरह जड़ों से आ चिपका—
भूम
धीम
जड़ें, उस आश्चर्यजनक रसायन के खत्म होने से लगभग तुरंत ही सूखनी शुरू हो चुकी थीं।
कि तभी— दलदला को अपने पेट के अंदर कीड़े रेंगते महसूस हुए। वे कीड़े जैसे उसके अंदर का सारा अंग खा रहे थे।
वाह! तुम्हारा नाम तो मैं अबतक नहीं पूछ पाया। लेकिन तुम जो भी हो, तुम्हारी बुद्धि और साहस की जितनी भी दाद दी जाए, कम होगी।
घातक रसायनों से भरे सिलेंडर का रसायन सीधे 'दलदला' के पेट में पहुंचकर उसकी भूख को शांत कर रहा था।
जबकि वास्तविकता यह थी कि काट वाला रसायन, दलदला के पेट के अंदर तक पहुंच चुका था। और अब वह उसके शरीर को पहले अंदर से गला रहा था।
—और फिर बाहर से।
देखते ही देखते— दलदला का शरीर गल कर दलदल में मिल गया।
और आप लोगों की बुद्धि की जितनी बुराई की जाए कम होगी! आप लोग ऐसे घातक रसायनिक हथियार बनाकर, इस पृथ्वी पर कहर ढाना चाहते हैं!
चाहे आप उसे मजबूरी में ही क्यों न बना रहे हों! ऐसे हथियार पूरी मानवता के लिए एक अभिशाप हैं।
आज तो एक राजनगर बच गया! पर कल क्या होगा?
एक आतंक का अंत हो गया। मिट्टी से पैदा हुई चीज, मिट्टी में मिल गई।
इस सवाल का भेड़नगरा के पास कोई जवाब नहीं था।
समाप्त